last day of year

तीव्र पुरुषार्थी = crossing thousands of hurdles at a time, through constantly flying stage (उड़ती कला)

नये वर्ष में तीव्र पुरुषार्थी भव के वरदान द्वारा अपने चेहरे से फरिश्ता रूप दिखाओ, लाइट माइट स्वरूप ज्वालामुखी योग से व्यर्थ को जलाओ, दु:खी अशान्त आत्माओं को शक्तियों का दान दो

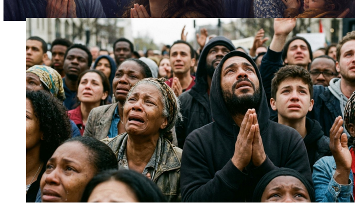

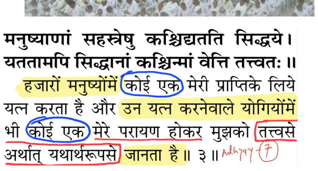
मनुष्याणां सहस्रेषु कश्चिद्यतति सिद्धये।
यततामपि सिद्धानां कश्चिन्मां वेत्ति तत्त्वतः॥
हजारों मनुष्योंमें कोई एक मेरी प्राप्तिके लिये यत्न करता है और उन यत्न करनेवाले योगियोंमें भी कोई एक मेरे परायण होकर मुझको तत्त्वसे अर्थात् यथार्थरूपसे जानता है॥ ३॥

आज ब्राह्मण परिवार के रचता अपने चारों ओर के परिवार को देख रहे हैं। है छोटा सा परिवार, छोटा सा संसार है लेकिन बहुत प्यारा है क्योंकि कोटों में से कोई है। क्यों प्यारे हैं? क्योंकि बाप को पहचाना है। (चढ़ाओ नशा... How lucky and Great we are...!) बाप से वर्से के अधिकारी बने हैं। तो जैसे बाप प्यारे हैं वैसे यह ब्राह्मण परिवार भी प्यारा है। बापदादा ने जन्मते ही हर बच्चे के मस्तक में भाग्य के सितारे को चमकाया है इसलिए यह छोटा सा संसार अति प्यारा

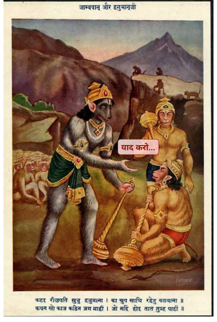

है। आप सभी भी अपना इतना स्वमान जानते हो ना! बापदादा भी एक-एक बच्चे को देख खुश होते हैं और क्या गीत गाते हैं? वाह बच्चे वाह!

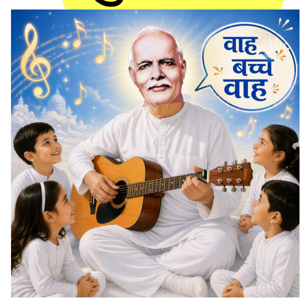

old year New year
31st Dec. to 1st Jan

आज तो सभी इस श्रेष्ठ दिन पर बाप से मिलने आये हैं। आज का दिन है संगम का दिन। विदाई भी है और बधाई भी है। वैसे भी संगम का महत्व है। जहाँ भी सागर और नदी का संगम होता है उसका बहुत महत्व होता है। तो आज के दिन का भी महत्व बहुत गायन योग्य है। पुराना वर्ष समाप्त और नया वर्ष आरम्भ होना है। आज के दिन सभी के दिल में आगे आने वाले वर्ष के लिए कितना उमंग है! हर एक ने अपने-अपने दिल में प्लैन बनाया है - क्या छोड़ना है और क्या बनना है! दोनों ही प्लैन बनाया है? बनाया है? जिसने आने वाले वर्ष के लिए अपने आगे बढ़ने का, तीव्र पुरुषार्थ का प्लैन बनाया है, वह हाथ उठाना। बनाया है! मुबारक हो, क्योंकि सब जानते हैं कि बापदादा हर बच्चे के लिए क्या चाहता है। बापदादा हर बच्चे के लिए यही शुभ भावना रखते हैं कि हर बच्चा बाप समान सम्पन्न और सम्पूर्ण बन जाये। अब तो समय भी साथ दे रहा है। तो हर एक ने अपने मन में अपने प्रति नया प्लैन बनाया है ना! कुछ

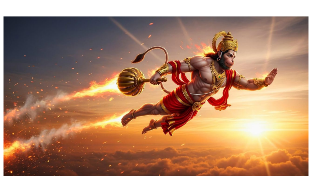

बापदादा हमसे क्या चाहते है?

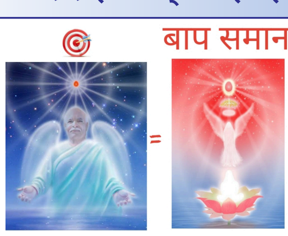

छोड़ना है और कुछ आगे बढ़ना है। तो छोड़ना क्या है? बापदादा ने देखा कि पुराने संसार और सम्बन्ध में छोड़ने में सबका पुरुषार्थ पर अटेन्शन भी है। एक बात जो छोड़ने भी चाहते हैं लेकिन अब तक बापदादा ने देखा कि पुराने संस्कार उसको छोड़ने में थोड़ी मेहनत लगती है। तो बापदादा यही चाहते हैं कि इस नये वर्ष में हर एक बच्चा अपने निज़ी संस्कार का संस्कार कर ले। आप सब भी इसी संकल्प को पूरा करने चाहते हैं ना! क्योंकि पुराना संस्कार जिसको आप लोग कहते हो मेरी नेचर है, भाव नहीं है लेकिन नेचर है। तो नेचर इस जन्म के ब्राह्मण की नहीं है लेकिन पुरानी है। तो उस पुराने संस्कार वा नेचर को आज के दिन छोड़ने का संकल्प कर सकते हैं? हर एक अपने को तो जानते हैं, तो आज वर्ष की विदाई के साथ-साथ उस पुराने संस्कार को छोड़ने का दृढ़ संकल्प कर सकते हो? कर सकते हो? चाहते भी हैं, ऐसा नहीं है कि चाहते नहीं हैं लेकिन फिर भी बार-बार पुरुषार्थ में तीव्रता लाने में वही संस्कार भिन्न-भिन्न रूप से विघ्न डालते हैं। तो बापदादा यही चाहते हैं कि वर्ष को विदाई देने के साथ आज के दिन उसको भी विदाई दे दो। इसके लिए तैयार हैं? जो तैयार हैं वह हाथ उठाओ। इसके लिए क्या करेंगे? अपने लिए कोई प्लैन भी सोचा है? इसके लिए सबसे अच्छी बात है दृढ़ संकल्प। संकल्प

बापदादा हमसे क्या चाहते है?

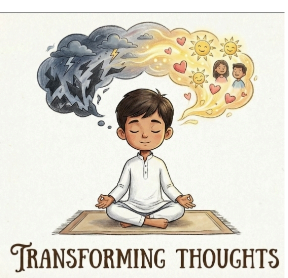

दृढ़ संकल्प

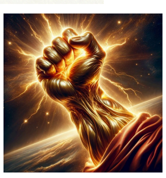

बापदादा हमसे क्या चाहते है?

दृढ़ संकल्प

Points: ज्ञान योग धारणा सेवा M.imp.

है, होना चाहिए लेकिन संकल्प में तीव्रता चाहिए।

Example

जैसे ब्राह्मण बनने के साथ-साथ यह प्रतिज्ञा की कि कोई भी अशुद्ध भोजन स्वीकार नहीं करना है। तो बापदादा ने देखा इसमें दृढ़ संकल्प द्वारा मैजारिटी पास हैं। जैसे तन के लिए अशुद्ध भोजन का संकल्प किया और प्रैक्टिकल कर रहे हो, ऐसे ही मन के लिए यह दृढ़ संकल्प करना है कि कभी भी किसी के प्रति (No matter Who he/she is...) भी, किसी भी सरकमस्टांश प्रमाण (In Any situation) कोई भी व्यर्थ संकल्प न कर सदा हर आत्मा के प्रति शुभ भावना, शुभ कामना रखनी ही है। मन का भोजन है संकल्प, तो जैसे तन के लिए दृढ़ संकल्प मैजारिटी ने किया है, ऐसे ही क्या मन के लिए व्यर्थ संकल्प, अशुद्ध भावना मिटा नहीं सकते? हर आत्मा के प्रति दिल का स्नेह और सहयोग अपने मन में नहीं रख सकते हैं?

Note it down

समझा?

पुछो अपने आप से...

बापदादा हमसे क्या चाहते है?

तो आज बापदादा इस पुराने वर्ष के साथ इस वृत्ति वा दृष्टि को हर बच्चे से विदाई चाहते हैं। यह दृढ़ संकल्प कर सकते हो? कर सकते हैं? बोलो, मातायें, टीचर्स, सब भाई भी चाहते हैं ना। हाँ हाथ उठाओ। कल से किसी भी आत्मा के प्रति अगर कोई भी व्यर्थ है, व्यर्थ भावना वा व्यर्थ भाव, उसका आज समाप्ति

Points: ज्ञान योग धारणा सेवा M.imp.

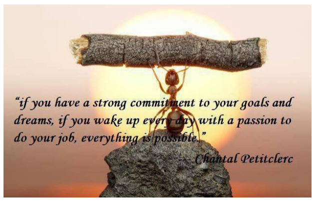

समझा?

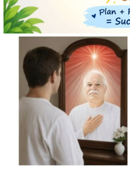

बाप समान

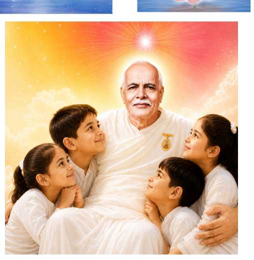

समारोह मनाने चाहते हैं। बोलो, टीचर्स सब तैयार हैं? टीचर दो दो हाथ उठाओ। उठाओ। अच्छा। जिन्होंने नहीं उठाया, वह उठाओ। जिन्होंने नहीं उठाया वह थोड़ा सा उठके खड़े हो जाओ। अच्छा हैं! जो पुरुषार्थ करेंगे लेकिन दृढ़ संकल्प नहीं करेंगे, ऐसे हैं? जो उठे हैं वह लक्ष्य और पुरुषार्थ करेंगे तो हाथ उठाओ क्योंकि समय का अटेन्शन रख यह सोचो कि "सभी को इस संगम समय में भविष्य बहुत समय की सफलता प्राप्त करनी है। 21 जन्म का वर्सा लेना है।" तो कहाँ यह एक जन्म और कहाँ 21 जन्म! तो इस एक जन्म में भी काफी समय अपना पुरुषार्थ तीव्र करना पड़े तभी बहुत समय की जो प्राप्ति करनी है, वह कर सकेंगे। बाप से प्यार है ना तो साथ रहना है ना! नजदीक रहना है ना! ब्रह्मा बाप के साथी बनके राज्य अधिकारी बनना है ना! तो अब भी इतना समय बाप समान तो बनना पड़े। ब्रह्मा बाप का एक-एक बच्चे से कितना प्यार है, वह तो जानते ही हो। हर एक कहता है - बाबा का जितना मेरे से प्यार है उतना किससे नहीं है, मेरे से प्यार है। तो यह प्यार, बाप दादा दोनों का प्यार इस जन्म में ही अनुभव कर रहे हो। और जिससे प्यार होता है उसकी बात कभी भी टाली नहीं जाती है। तो ब्रह्मा बाप से सबका प्यार है, कितना प्यार है? बहुत प्यार है। चाहे दिखा नहीं

सकते हैं लेकिन बाप जानते हैं कि प्यार सभी बच्चों का है, नम्बरवार है लेकिन प्यार है, इसमें बापदादा भी सभी बच्चों को सर्टिफिकेट देते हैं कि प्यार है। प्यार तो है लेकिन बाप ने देखा कि कभी-कभी नटखट हो जाते हैं, तो बाप उस समय क्या करता? बाप देख-देख विशेष शक्ति देता रहता क्योंकि बाप यही चाहते हैं कि हर बच्चा राजा बच्चा है, दुनिया में जो लाडला बच्चा होता है उसको राजा बच्चा कहते हैं। होता राजा नहीं लेकिन कहते हैं राजा बच्चा, लेकिन आप सभी बापदादा के अब भी राजा बच्चा हो और भविष्य में भी राजा बच्चा हो। अभी स्वमान है, स्वराज्य है। अभी आत्मा का राज्य सर्व कर्मेन्द्रियों के ऊपर है। तो स्वराज्यधारी अभी हो और विश्व राज्यधारी भविष्य में हो। तो राजा बच्चे हो ना! हैं तो कांध हिलाओ।

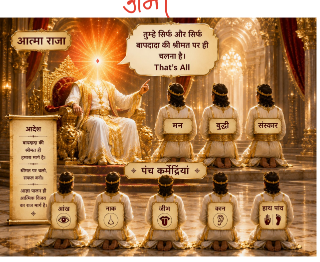

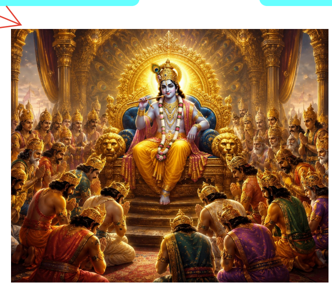

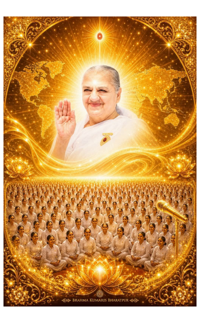

तो बापदादा आज अमृतवेले चारों ओर, चाहे विदेश चाहे देश, चारों ओर चक्र लगाने गये। तो क्या देखा? योग में अमृतवेले बैठते मैजारिटी हैं लेकिन स्नेह में बैठते हैं, बापदादा से बातें भी करते हैं, आत्मिक स्मृति में भी बैठते, बाप-दादा से शक्ति भी लेते हैं लेकिन अभी बापदादा आने वाले नये वर्ष में नवीनता

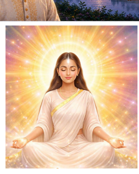

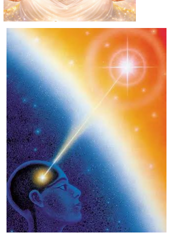

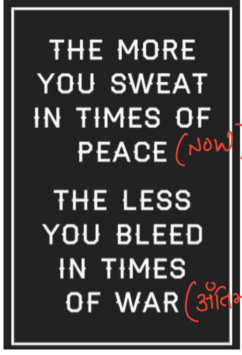

May I have your Attention Please..!

Don't Take it easy

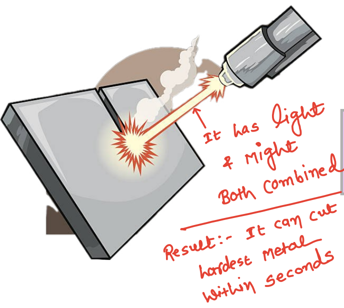

Coming soon...

So, Do the Practice Now...

चाहते हैं क्योंकि अभी समय दिन प्रतिदिन नाज़ुक आना ही है। तो ऐसे समय पर अभी ज्वालामुखी योग चाहिए। वह ज्वालामुखी योग की आवश्यकता अभी आवश्यक है। ज्वालामुखी योग अर्थात् लाइट माइट स्वरूप शक्तिशाली, क्योंकि समय प्रमाण अभी दु:ख, अशान्ति, हलचल बढ़नी ही है इसलिए अपने दु:खी, परेशान आत्माओं को विशेष ज्वालामुखी योग द्वारा शक्तियां देने की आवश्यकता पड़ेगी। दु:ख अशान्ति के रिटर्न में कुछ न कुछ शक्ति, शान्ति अपने मन्सा सेवा द्वारा देनी पड़ेगी। जो आपने इस समय की टॉपिक रखी है एक परिवार, उसके प्रमाण जब एक परिवार है, तो अशान्त आत्माओं को कुछ तो अंचली देंगे इसीलिए बापदादा अगला वर्ष जो आया कि आया उसके लिए विशेष अटेन्शन खिंचवा रहे हैं कि अभी ज्वालामुखी योग की आवश्यकता है। ज्वालामुखी योग द्वारा ही जो भी संस्कार रहे हुए हैं वह भी भस्म होने हैं।

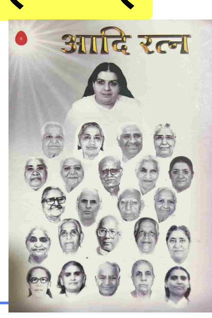

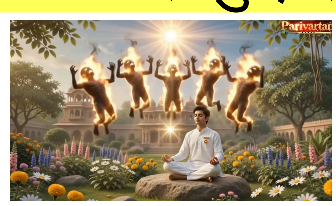

अभी आपकी एडवांस पार्टी के साथी आप सबसे यह चाहते हैं कि अभी समाप्ति के समय को सामने लाओ। अब रिटर्न जरनी याद रखो। आपकी दीदी याद दिला रही है कि मुझे सदा यह याद रहता था

Points: ज्ञान योग धारणा सेवा M.imp.

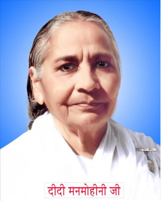

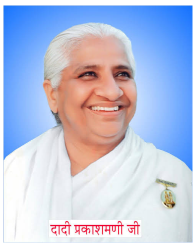

“अब घर जाना है", अब घर जाना है। आपकी दादी यही याद दिला रही है कि जैसे मुझे याद रहा “अभी सम्पन्न बनना है, सम्पूर्ण बनना है,” धुन लगी रही। तो आज विशेष अमृतवेले वतन में बापदादा से मिलन मनाते कह रहे थे कि अभी हमारे तरफ से, जो भी दादियां गई हैं सब मिलके कह रही थी अब ज्वालामुखी योग की बहुत आवश्यकता है, चाहे औरों को शक्ति देने के लिए, चाहे अपने ब्राह्मण परिवार को सम्पन्न बनाने के लिए। अभी समय को समीप लाने वाले आप निमित्त हो इसलिए आने वाले वर्ष में क्या करेंगे? विशेष क्या करेंगे? एक दो के स्नेही सहयोगी बन हर एक सेन्टर, सेवास्थान ज्वालामुखी योग का वायब्रेशन और कर्म में एक दो के स्नेही सहयोगी बन, हर एक के प्रति अटेन्शन रखते जो भी कमी है उसमें सहयोग दो। मन्सा द्वारा अन्य आत्माओं की सेवा करो और अपने सहयोग द्वारा ब्राह्मण साथियों की विशेष सेवा करो, तभी हम लोगों की दिल की आश पूरी होगी।

पहचानो अपने आप को...

तो आज वतन में एडवांस पार्टी अगले साल के लिए आप सबको याद भी दे रही थी और अपने दिल की आशायें भी बता रही थी। तो बोलो, बापदादा का

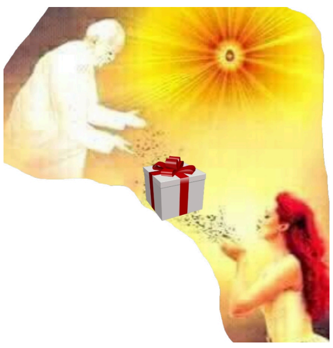

संकल्प तो सुना ही लेकिन साथ में अपने दादियों की भी अगले वर्ष के लिए शुभ भावनायें भी सुनी ना! बापदादा तो सभी बच्चों को चाहे कोई कमजोर है, चाहे तीव्र पुरुषार्थी है सबको तीन मुबारक दे रहे हैं - एक नव जीवन की मुबारक, दूसरी नव वर्ष की मुबारक और तीसरी नव दुनिया में साथी बन चलने की मुबारक।

M.M.M.....imp.

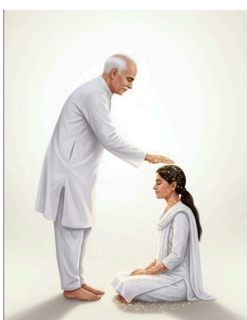

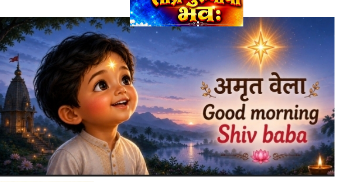

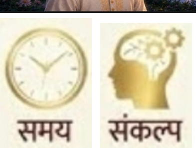

Refer last page.

बापदादा ने यह भी कहा कि सभी अपने अन्दर अपने लिए समय निश्चित करो कि कब तक अपने को बाप समान बनायेंगे। अपने अन्दर अपने लिए निश्चित करो। तो निश्चित करना आता है ना? बापदादा तो आज हर बच्चे को देख यही वरदान दे रहे हैं अगले वर्ष में हर बच्चा तीव्र पुरुषार्थी भव। अमृतवेले जब याद में बैठते हो और जब उठने का समय होता है उस समय बापदादा का यह वरदान अपने दिल में याद रखना तीव्र पुरुषार्थी भव। जैसे बापदादा ने दो बातें पहले ही अटेन्शन में दिलाई हैं क्योंकि संगम का समय अचानक समाप्त होना है। तो एक समय, दूसरा संकल्प, दोनों पर हर घड़ी अटेन्शन। बापदादा की यह भी हर बच्चे के प्रति शुभ भावना है कि हर बच्चा इस वर्ष में क्या बनें? क्या बनेंगे? जो भी आपके चेहरे

ATTENTION

में देखे आपके चेहरे से फरिश्ता रूप दिखाई दे। फलानी हूँ, फलाना हूँ नहीं। फरिश्ता अनुभव में आवे,

To get this stage

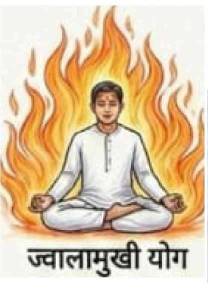

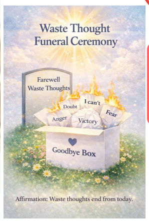

इसके लिए ज्वालामुखी योग, कोई व्यर्थ नहीं। लाइट और माइट स्वरूप योग से व्यर्थ को जलाओ। समर्थ फरिश्ता नज़र आये, जिसको भी देखें, क्योंकि बाप के सिकीलधे बच्चे तो हो।

M.M.M.....imp. कौन हो तुम... पहचानो अपने आप को...

बाप ने आपको खास कहाँ-कहाँ से चुन करके अपना बनाया है। तो लक्ष्य रखो मैं ब्राह्मण सो फरिश्ता हूँ। तो अमृतवेले अपनी दिनचर्या में यह याद रखना मैं ब्राह्मण सो फरिश्ता हूँ। चलते फिरते फरिश्ता रूप, फरिश्ता स्वरूप तो अच्छा लगता है ना! ब्रह्मा बाप फरिश्ता बना, फालो फादर।

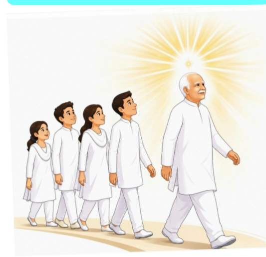

तो इस वर्ष का वरदान जो दिया तीव्र पुरुषार्थी, साधारण पुरुषार्थ नहीं, साधारण पुरुषार्थ है तो राज्य के साथी नहीं बनेंगे। और बाप यही चाहता है कि जितने भी बापदादा की मुरली अध्ययन करने वाले गॉडली स्टूडेन्ट हैं, वह सबके सब क्या बनेंगे? फरिश्ता। सब बोझ उतर जायेगा। कोई भी संस्कार का बोझ समाप्त हो जायेगा। तो इस वर्ष का होमवर्क क्या रहा? फरिश्ता स्वरूप में रहना है, इसको ही कहा जाता है तीव्र पुरुषार्थ। अभी हर एक सेन्टर, हर सप्ताह, हर स्टूडेन्ट की रिजल्ट देखे की तीव्र पुरुषार्थी

ये पक्का समझ लो..

बापदादा हमसे क्या चाहते है?

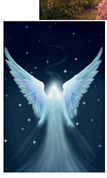

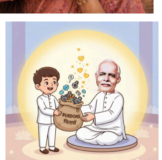

रहे? अगर कोई भी बात आई, उसके लिए सहयोगी बन करके, स्नेह से उनको हिम्मत दे और अपने सेन्टर को, स्टूडेन्ट को तीव्र पुरुषार्थी बनाये, हर सप्ताह रिजल्ट देखे क्योंकि समय हलचल का होना ही है।

So, Be Prepared before time.

तो आज के संगम दिन पर विदाई और बधाई के दिन पर चारों ओर के, जहाँ भी जो बैठे हैं बच्चे, बापदादा देख रहे हैं, कैसे सभी साइंस के साधनों द्वारा देख भी रहे हैं और देख-देख कितने खुश हो रहे हैं। तो चारों ओर के बच्चों को बापदादा विशेष वरदान दे रहे हैं "सदा सन्तुष्टमणि भव"। सन्तुष्ट रहना, सन्तुष्ट करना। अच्छा।

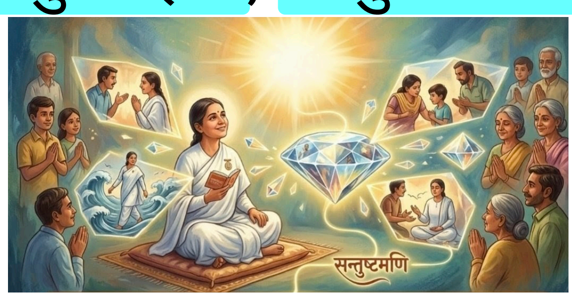

अभी दादियां मिल करके कोई नया प्लैन बनाओ। (दादी जानकी ने कहा - बाबा जनवरी मास का बहुत महत्व है। जनवरी मास में अगर सभी मिलकर पुरुषार्थ करें, ऐसी सेवा का कोई प्लैन बन जाए, जो सबके दिल से जिगर से निकले कि मेरा बाबा, ऐसी मेरी भावना है।)

04-10-26 प्रात:मुरली ओम् शान्ति "अव्यक्त-बापदादा" रिवाइज: 31-12-11 मधुबन

बापदादा हमसे क्या चाहते है?

बापदादा नये वर्ष में नवीनता चाहते हैं, वही संस्कार नहीं चाहते हैं। एक-एक बच्चा बाप समान दिखाई दे। फालो ब्रह्मा बाप। सरकमस्टांश, बातें सब कुछ बाप के आगे आई लेकिन फरिश्ता बन गये। तो फरिश्ता बनना ही है, यह दृढ़ संकल्प हर एक अपने आपसे करे क्योंकि अपने आपसे करेंगे तो अटेन्शन रहेगा। मुझे बनना है बस। और आपके बनने से नेचुरल वायब्रेशन फैलेगा। तो अभी क्या लक्ष्य रखा? फरिश्ता बनना ही है, बोलो। पक्का है ना! अच्छा। सभी को बहुत बहुत बापदादा के दिल का प्यार और मुबारक हो।

बाप समान

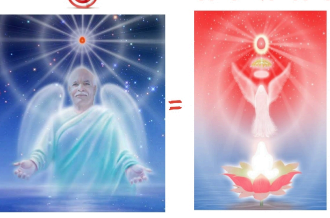

Subtle Psychology

At any cost...

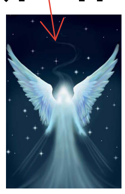

Understand व्यर्थ -at very Subtle level

समझा?

अव्यक्त बापदादा: AV: 24/2/2002

जब तक हर ब्राह्मण आत्मा के स्वयं की वृत्ति में *_कैसी भी आत्मा के प्रति_* वायब्रेशन निगेटिव है तो विश्व कल्याण प्रति वृत्ति से वायुमण्डल में वायब्रेशन फैला नहीं सकेंगे।

यह पक्का समझ लो।

कितनी भी सेवा कर लो, रोज़ आठ-आठ भाषण कर लो, योग शिविर करा लो, कई प्रकार के कोर्स करा लो लेकिन *किसी के प्रति भी अपनी वृत्ति में कोई पुराना निगेटिव वायब्रेशन नहीं रखो।*

अच्छा वह खराब है, बहुत गलतियां करता है, बहुतों को दु:ख देता है, तो क्या आप उसके दु:ख देने में जिम्मेवार बनने के बजाए, उसको परिवर्तन करने में मददगार नहीं बन सकते?

दु:ख में मदद नहीं करना है, उसको परिवर्तन करने में आप मददगार बनो। अगर कोई ऐसी भी आत्मा है जो आप समझते हैं, बदलना नहीं है। चलो, आपकी जजमेंट में वह बदलने वाली नहीं है, लेकिन नम्बरवार तो हैं ना! तो आप क्यों सोचते हो यह तो बदलने वाली है ही नहीं।

(Most imp) *आप क्यों जजमेंट देते हो, वह तो बाप जज है ना।* आप सब एक दो के जज बन गये हो। बाप भी तो देख रहा है, यह ऐसे हैं, यह ऐसे हैं, यह ऐसे हैं....।

ब्रह्मा बाप को प्रत्यक्ष में देखा कैसी भी बार-बार गलती करने वाली आत्मा रही लेकिन बापदादा (विशेष साकार रूप में ब्रह्मा बाप) ने सर्व बच्चों प्रति याद-प्यार देते, सर्व बच्चों को मीठे-मीठे कहा। दो चार कड़ुवे और बाकी मीठे...क्या ऐसे कहा? फिर भी ऐसी आत्माओं के प्रति भी सदा *रहमदिल बने। क्षमा के सागर बने।* लेकिन अच्छा आपने अपनी वृत्ति में किसी के प्रति भी अगर निगेटिव भाव रखा, तो इससे आपको क्या फायदा है? अगर आपको इसमें फायदा है, फिर तो भले रखो, छुट्टी है। अगर फायदा नहीं है, परेशानी होती है..., वह बात सामने आयेगी। बापदादा देखते हैं, उस समय उसको आइना दिखाना चाहिए।

तो जिस बात में अपना कोई फायदा नहीं है, नॉलेजफुल बनना अलग चीज़ है, नॉलेज है - यह रांग है, यह राइट है। नॉलेजफुल बनना रांग नहीं है, लेकिन *वृत्ति में धारण करना यह रांग है* क्योंकि अपने में ही मूड आफ, व्यर्थ संकल्प, याद की पावर कम, नुकसान होता है।

जब प्रकृति को भी आप पावन बनाने वाले हो तो यह तो आत्मायें हैं।

1 वृत्ति, 2 वायब्रेशन और 3 वायुमण्डल तीनों का सम्बन्ध है।

वृत्ति से वायब्रेशन होते हैं,
वायब्रेशन से वायुमण्डल बनता है। } Imp. to understand
लेकिन *मूल है वृत्ति।*

अगर आप समझते हो कि जल्दी-जल्दी बाप की प्रत्यक्षता हो *तो*

तीव्रगति का प्रयत्न है सब *अपनी वृत्ति को अपने लिए, दूसरों के लिए पॉजिटिव धारण करो।* नॉलेजफुल भले बनो लेकिन अपने मन में निगेटिव धारण नहीं करो।

M.M.M.....imp.

निगेटिव का अर्थ है किचड़ा।

अभी-अभी वृत्ति पावरफुल करो, वायब्रेशन पावरफुल बनाओ, वायुमण्डल पावरफुल बनाओ क्योंकि सभी ने अनुभव कर लिया है,
वाणी से परिवर्तन, शिक्षा से परिवर्तन बहुत धीमी गति से होता है, होता है लेकिन बहुत धीमी गति से। (mind very well)
अगर आप फास्ट गति चाहते हो तो नॉलेजफुल बन,
क्षमा स्वरूप बन, रहमदिल बन, शुभ भावना, शुभ कामना द्वारा वायुमण्डल को परिवर्तन करो।

वरदान: सर्व खाते और रिश्ते एक बाप से रखने वाले डबल लाइट फरिश्ता भव

डबल लाइट फरिश्ता बनने के लिए देह के भान से भी परे रहो क्योंकि देह भान मिट्टी है, यदि इसका भी बोझ है तो भारीपन है।

फरिश्ता अर्थात् अपनी देह के साथ भी रिश्ता नहीं। बाप का दिया हुआ तन भी बाप को दे दिया।

अपनी वस्तु दूसरे को दे दी तो अपना रिश्ता खत्म हुआ।

सब रिश्ते-नाते हँस के तोड़ दूँ
बस तुझसे दिल का रिश्ता जोड़ दूँ, जोड़ दूँ

सब हिसाब-किताब, सब लेन-देन बाप से बाकी सब पिछले खाते और रिश्ते खत्म

- ऐसे सम्पूर्ण बेगर ही (only) डबल लाइट फरिश्ते हैं।

स्लोगन:- अपनी विशेषताओं को प्रयोग में लाओ तो हर कदम में प्रगति का अनुभव करेंगे।

Points: ज्ञान योग धारणा सेवा M.imp.

04-10-26 प्रात:मुरली ओम् शान्ति "अव्यक्त-बापदादा" रिवाइज: 31-12-11 मधुबन

ये अव्यक्त इशारे -

परोपकार की भावना से सम्पन्न बन अपकारी पर भी उपकार करो

किसी भी आत्मा से कुछ ले करके देने की इच्छा न हो,

संकल्प में भी यह न आये कि यह करे तो मैं करूँ, यह बदले तो मैं बदलूँ, कुछ वह बदले, कुछ मैं बदलूँ....

भिखारी को भी मालामाल बनाने वाला - अपकारी के ऊपर उपकार करने वाला ही परोपकार की भावना से सम्पन्न है।

If you wish to stay connected, Here is the link

WhatsApp

TELEGRAM

WORLD WIDE WEB

BKdrluhar

Mind maps are Available on WhatsApp and Telegram Only

अव्यक्त बापदादा:

वरदान का फल निकालने के लिए बार-बार वरदान को स्मृति में लाओ। स्मृति स्वरूप के स्थिति में स्थित रहो।

AV: 30/11/2009
Revise: 12/4/26

All वरदान slogans Sept 26 → Click

All अव्यक्त इशारे Sept 26 → Click

All वरदान, slogans and अव्यक्त इशारे At Single place → Click

अव्यक्त बापदादा:

आजकल के जमाने के हिसाब से तो बातें बहुत बदलती जाती हैं। गवर्मेन्ट के कायदे भी बदलने हैं, मनुष्यों की वृत्ति भी बदलनी है। तो हर एक के जीवन में व्यर्थ बातें तो आनी ही हैं, तो व्यर्थ को समाप्त करने के लिए समर्थ संकल्प चाहिए। वेस्ट को खत्म करने के लिए बेस्ट संकल्प चाहिए। तो रोज़ की मुरली में जो वरदान, स्लोगन आता है उसे सुनो। यह वरदान ही श्रेष्ठ संकल्प है। जब व्यर्थ आवे तो श्रेष्ठ संकल्प मन को चाहिए। मन खाली नहीं रह सकता है। मन को कुछ न कुछ संकल्प चाहिए। तो व्यर्थ वेस्ट को बेस्ट करने के लिए आपको यह वरदान और स्लोगन आदि के शब्द मन को चेंज करने के लिए चाहिए।

Remedy

Subtle Psychology

AV: 15/03/2010
Revise: 31/05/2026

अभी बापदादा ने देखा कि बच्चों को माया भी अब तक छोड़ती नहीं है उनका भी प्यार है। और आजकल दो रूपों में विशेष माया भी चांस लेती है। दो रूप में आती है - एक व्यर्थ संकल्प और दूसरा कहीं-कहीं कभी कभी यह भी लहर है जो मैंने किया वा सोचा मैं ही राइट हूँ मैं कम नहीं हूँ। यह लहर फैली हुई है - मैं ही राइट हूँ लेकिन जो कनेक्शन में आते हैं या निमित्त बने हुए हैं वह भी आपके विचार को साथ देते हैं! दूसरों की भी वेरीफिकेशन मिलनी चाहिए।

Attention Please..!

यह व्यर्थ संकल्प टाइम वेस्ट करते हैं। इसलिए बापदादा रोज की मुरली मनन करने के लिए सेवा करने के लिए होमवर्क में रोज देते हैं। अगर मनन करो या मनन करते-करते मगन हो जाओ तो यह रोज का होमवर्क मन को बिजी करने का साधन है।

Example

सुनना और मनन करना या मगन हो जाना यह बापदादा रोज का होमवर्क इसीलिए देता है। जैसे बच्चों को होमवर्क इतना ज्यादा दे देते हैं जो उनकी बुद्धि करने में बिजी रहे। ऐसे रोज की मुरली उसमें चार ही सबजेक्ट का होमवर्क है। मन्सा का भी है वाणी का भी है कर्म का भी अटेन्शन और दिव्यता का इशारा होमवर्क है। तो होमवर्क में बिजी रहेंगे तो व्यर्थ संकल्प के आने की मार्जिन नहीं रहेगी।

समझा?

इस विधि को अपनाते रहेंगे तो व्यर्थ संकल्प स्वत: ही आपसे विदाई ले जायेंगे क्योंकि बापदादा ने देखा याद की यात्रा पर सभी का नम्बरवार अटेन्शन है वाचा सेवा में भी अटेन्शन है। लेकिन अभी अपने संस्कार या दूसरों के संस्कार को परिवर्तन करना यह स्वभाव संस्कार जिसको रॉयल रूप में आप कहते हो नेचर मेरी नेचर है भाव नहीं है नेचर है यह धारणा की सबजेक्ट अभी भी रॉयल रूप में आती रहती है। तो बापदादा आजकल यही इशारा देते हैं कि जो भी धारणाओं में कमी होती है उसको अभी विशेष अटेन्शन दो।

AV: 24/10/2010

Revise: 14/06/2026

12.2 अमृतवेले की विशेषतायें

(अ) मीठे बच्चे अमृतवेले उठ बाप की याद का घृत रोज़ डालो, तो आत्मा रूपी ज्योति सदा जगी रहेगी। घृत डालने के लिए सवेरे का टाइम बहुत अच्छा है। आत्मा रूपी ज्योति को प्रज्वलित करने के लिए सवेरे-सवेरे याद की यात्रा में बैठना है। याद से ही आत्मा की जंक निकलेगी, फिर सच्चा सोना बनेगी।

(आ) मीठे बच्चे, शिव बाबा की **नम्बर वन श्रीमत है सवेरे-सवेरे उठ मुझ बाप को याद करो, तो तुम्हारा बेड़ा पार हो जायेगा।** कहते हैं सुबह का साईं। व्यापारी लोग सुबह को दुकान के आगे माथा टेक कर फिर अन्दर घुसते हैं क्योंकि आमदनी होती है ना! आमदनी के लिए कहते हैं — ''सुबह का साईं बेड़ा बने लाईं... ऐसे कहते हैं। साईं बाबा है रात को दिन बनाने वाला। रात का साईं है रावण। रात को दिन बनाने वाला साईं बाबा यह एक ही है और बहुत भोला है। नाम ही है भोलानाथ। भोली कन्याओं-माताओं पर ज्ञान का कलश रखते हैं। उन्हों को वर्सा दे, विश्व का मालिक बनाते हैं। तुम अपने बाप को सवेरे उठकर याद करते रहो तो एकदम बेड़ा पार हो जायेगा।

The World Almighty's Guarantee

(इ) बाप कहते हैं **रात को जागो। तुम्हारी तबियत खराब नहीं होगी।** योग से तो और ही बल मिलेगा। स्वदर्शन चक्रधारी बन चक्र फिराओ। **हे नींद को जीतने वाले लाडले बच्चे! याद से ही विकर्म विनाश होंगे।** मुख्य बात है सवेरे उठ कर अल्फ़ को याद करना। यह वेला सोने की नहीं है। इस उपाय से ही विकर्म विनाश होते हैं। और कोई उपाय नहीं। बाप तुम बच्चों के साथ कितना वफ़ादार है! कभी तुम को छोड़ेंगे नहीं। आये ही हैं सुधार कर साथ ले जाने। याद

One & Only way

ritVela.p
2/18/2010, 11:58 AM

की यात्रा से ही तुम सतोप्रधान होंगे। भक्त लोग भी सुबह सवेरे उठते हैं। माला आदि फेरते हैं। तुम बच्चों को सवेरे उठ बाप को याद करना चाहिए। विकर्म विनाश के लिए योग-अग्नि चाहिए।

(ई) मीठे बच्चे, **रोज़ अमृतवेले ज्ञान-योग की वास धूप जगाओ, तो विकारों रूपी भूत भाग जायेंगे।** अमृतवेले बाबा की याद अच्छी रहती है। कहते हैं सिमर-सिमर सुख पाओ। भक्त लोग भी कहते राम सुमिर प्रभात मोरे मन...।

(उ) हे रूहानी योद्धे, तुम सदा श्रीमत पर चलते रहो। आत्म-अभिमानी बन बाप को याद करो। रोज़ सवेरे-सवेरे उठ याद में रहने का अभ्यास डालो, तो **माया पर विजय प्राप्त कर लेंगे।** याद की मीठी युक्ति मायाजीत बना देगी। पवित्र होने के लिए याद के सिवाय और कोई उपाय नहीं है।

(ऊ) मीठे बच्चे, अमृतवेले उठ बाप से मीठी-मीठी बातें करो, तो **शरीर का भान खत्म हो जायेगा, सिमरण करते-करते अन्त मति सो गति हो जायेगी।** ऐसी प्रैक्टिस करनी है जो अन्त में देह भी याद न पड़े।

बातें पहले ही अटेन्शन में दिलाई हैं क्योंकि संगम का समय अचानक समाप्त होना है। तो एक समय, दूसरा

संगम का समय अचानक समाप्त होने का अर्थ क्या है?

Answer:(Just Churning/मन मत) इसका अर्थ ये है कि संगम पर पुरुषार्थ करने का समय अचानक पूरा हो जाएगा।

just समझने के लिए example: आज शाम को 6:21:52 अर्थात 6 बजकर 21 मिनिट और 52 सेकंड पर संगम का पुरुषार्थ का समय पूरा हो जाता है, तो उस समय ऐसा नही की आसमान में कोई बिजली कड़केगी या आकाशवाणी होगी कि पुरुषार्थ का समय पूरा हुआ।
किंतु इसका अर्थ ये है कि उस समय के बाद, उस समय तक पुरुषार्थ से अपनी जो स्थिति बनाई है उसी अनुसार अपना जो पद है वो कल्प कल्पांतर के लिए फिक्स हो जाएगा। फिर कुछ नहीं कर सकेंगे।
और जो एक का पदम गुणा का हिसाब है वो बदलकर एक का एक गुणा हो जाएगा।

दूसरा example: जैसे Musical chairs का Game होता है ना। उसमें जैसे अचानक ही music बंध हो जाता है और खेलने वाले जो जहां बैठे वो पास और नहीं बैठे वो फैल।
ऐसे ही अचानक पुरुषार्थ के समय का म्यूजिक चलना बंद हो जाएगा और जो जहां है वहीं पर उसका पद fix हो जाएगा।

इसीलिए मीठे बापदादा हमेशा कहते है कि निरंतर बाप की याद में रहकर अपनी अचल अडोल स्थिति में स्थित रहो व निरंतर निर्वाण की स्थिति में रहो ...इत्यादि।

और फिर शुरू होगी प्रत्यक्षता।
ब्राह्मण आत्माएं अपने नंबर अनुसार(नंबरवार) अतीन्द्रिय सुख का अनुभव करेगी। और उसी नंबर अनुसार विश्व की आत्माओं के सामने इष्ट रूप में वो प्रत्यक्ष होगी। और उसी प्रमाण फरिश्ता भी बनेगी।
और अंत में मीठे बापदादा भी विश्व के सामने अपने बच्चों द्वारा प्रत्यक्ष हो जाएंगे।

Avyakt Bapdada:
अभी फिर भी कुछ गैलप (Gallop) करने का चॉन्स है, अभी किसी भी ग्रुप में अपने को परिवर्तित कर सकते हो।

लेकिन कुछ समय बाद, गैलप करने का समय भी समाप्त हो जायेगा और जिन्होंने जैसे और जितना पुरूषार्थ किया है, वे वहां ही रह जावेंगे।

फिर चाहे कितनी भी एप्लिकेशन डालो लेकिन मंजूर नहीं होगी, मजबूर हो जायेंगे।

AV: 30/5/74